Exam. Code : 216303
Subject Code: 5331

M.A. Hindi 3rd Semester

SURDAS

Paper—XV Opt. (i)

Time Allowed—3 Hours] [Maximum Marks—80

नोट :— यह प्रश्न-पत्र **चार** भागों में विभाजित है। प्रत्येक भाग से कम से कम **एक** प्रश्न करना अनिवार्य है। पाँचवां प्रश्न विद्यार्थी किसी भी भाग में से कर सकता है। प्रत्येक प्रश्न के **16** अंक हैं। (5×16=80)

भाग—अ

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :—

1. जाय दीलानाथ ढरै।

सोइ कुलीन, बड़ी सुंदर सोइ, जिहिं पर कृपा करै।

कौन विभीषन रंक-निसाचर, हरि हँसि छत्र धरै।

राजा कौन बड़ौ रावन तैं, गर्वहिं — गर्ब गरै।

रंकव कौन सुदामाहूँ तैं, आप समान करै।

अधम कौन है अजामील तैं, जम तहँ जात डरै।

अथवा

Scanned with CamScanner

मैया हौं न चरैहों गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौ, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।

2. चलत देखि जसुमति सुख पावै।
ठुमकि-ठुमकि पग धरनी रेंगत, जनन देखि दिखावै।
देहरि लौं चलि जात, बहरि फिरि-फिरि इतहीं कौं आवै।
गिरि-गिरि परत, बनत नहिं नाँघत सुर-मुनि सोच करावै।
कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर, हरत बिलंब न लावै।
ताकौं लिए नंद की रानी, नाना खेल खिलावै।
तब जसुमति कर टेकि स्याम कौ, क्रम-क्रम करि उतरावै।
सूरदास प्रभु देखि-देखि, सुर-नर-मुनि-बुद्धि भुलावै।।

अथवा

मधुकर भली करी तुम आए।
वै बातैं कहि कहि या दुख मैं, ब्रज के लोग हँसाए।
मोर मुकुट मुरली पीतांबर, पठवहु सौंज हमारी।
आपुन जटाजूट, मुद्रा धरि, लीजै भस्म अधारी।
कौन काज वृन्दावन कौ सुख, दही भात की छाक।
अब वै स्याम कूबरी दोऊ, बने एक ही ताक।
वै प्रभु बड़े सखा तुम उनके, जिनकैं सुगम अनीति।
या जमुना जल कौ सुभाव यह, सूर बिरह की प्रीति।

Scanned with CamScanner

भाग—ब

3. सूर-काव्य में लोक संस्कृति पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

4. कृष्ण-भक्ति काव्य में सूरदास का स्थान निर्धारित करें।

भाग—क

5. सूरकाव्य में वात्सल्य वर्णन पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

6. सूरकाव्य में निर्गुण-सगुण द्वन्द्व पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

भाग—ड

7. सूर की काव्य-भाषा पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

8. सूर-काव्य में गीति तत्व पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

Scanned with CamScanner